# अच्छा ! सर आप अंग्रेज़ी पढ़ाना चाह रहे थे

केवलानंद काण्डपाल*

*बच्चों को कम करके नहीं आँकना चाहिए, बच्चों के बीच सीखने-सिखाने की गतिविधि के अनुक्रम में अध्यापक के लिए यह ज़रूरी है कि वह बच्चों की रुचि, मनोदशा एवं पसंद की अनदेखी न करें। यह शिक्षणशास्त्रीय दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही, रोज़मर्रा की कक्षा-कक्ष के प्रबंधन के लिए भी समान रूप से ज़रूरी है। इस तथ्य को लेकर पर्याप्त सजगता बरतने की आवश्यकता होती है, अन्यथा हमारी सारी शिक्षण योजना एवं इससे जुड़ी हुई शिक्षण रणनीति धरी की धरी रह जाती है। बच्चे हमें अहसास करा देते हैं कि हमें बुद्धु न बनाओ, हम सब समझ रहे हैं। ऐसा ही एक रोचक लेखक द्वारा अनुभव इस आलेख के माध्यम से साझा करने का प्रयास किया गया है।*

11 जुलाई 2016 की बात है, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के स्पेशल 'डिप्लोमा इन एलिमेंट्री एजुकेशन' (डी.एल.एड.) प्रशिक्षु-शिक्षकों का शिक्षण अभ्यास निकटवर्ती राजकीय प्राथमिक विद्यालय, प्रथम कालांश में शिक्षण अभ्यास चल रहा था। दूसरे कालांश में कक्षा 5 में जिस प्रशिक्षु-शिक्षक की कक्षा थी, वह किसी कारणवश समय पर उपस्थित नहीं हो सकी थीं और उसके स्थान पर कोई दूसरे प्रशिक्षु-शिक्षक कक्षा में पढ़ाने के लिए इच्छुक नहीं थे। अन्य प्रशिक्षु-शिक्षक पूर्व निर्धारित कक्षा की अपनी-अपनी शिक्षण योजना एवं तैयारी के साथ आए होंगे, तो उनकी झिझक तर्कसंगत भी थी। इस कारण कक्षा इस कालांश में शिक्षक विहीन थी। मैंने महसूस किया कि इस प्रकार से कक्षा का खाली रहना ठीक नहीं है, फिर मेरे मन में अतिरिक्त लोभ तो था ही कि कुछ समय ही सही बच्चों से बातचीत का अवसर मिल जाएगा। शिक्षण अभ्यास के अवलोकन की ज़िम्मेदारी के लिए अपने सहकर्मियों से निवेदन किया और मैं कक्षा 5 की कक्षा में आ गया। यह कक्षा बरामदे में लगी थी। मैंने इस कक्षा में जाने का निश्चय किया। मेरा विचार था कि आज बच्चों के आस-पास की चीज़ों के लिए अंग्रेज़ी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों पर काम करूँगा। इस प्रकार से 30–35 अंग्रेज़ी शब्दों को जानने-पहचानने एवं इनको बच्चों के माध्यम से बोर्ड पर लिखने का लक्ष्य रखा था, मेरे विचार से 35 मिनट के कालांश के हिसाब से यही हो भी सकता था। बच्चों से शुरुआती बातचीत के बाद मैंने बच्चों से पूछ लिया कि आज वे इस कालांश

* *प्रवक्ता*, ज़िला एवं शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, बागेश्वर (उत्तराखंड) 263679.

में क्या पढ़ना चाहेंगे? सभी बच्चों ने छूटते ही कहा ड्राइंग। इसमें भी, बच्चे बताएँगे कि क्या बनाना है?

मुझे बोर्ड पर वही बनाना होगा जो बच्चे बताएँगे। मेरी योजना की तो जैसे हवा ही निकल गई थी। बच्चे मुझसे ड्राइंग बनाने को कह रहे थे, निर्देश बच्चों को देना था कि क्या-क्या बनाना है? यह मुझे एक प्रकार से ठीक ही लगा। (ठीक भी था कि बच्चों को ही हमेशा निर्देश क्यों मिलें, कभी वे भी तो इस हैसियत का इस्तेमाल करें।) मेरे पास बच्चों की बात मानने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं बचा था, फिर भी मैंने एक शर्त लगा दी कि मैं बोर्ड पर बच्चों द्वारा बताई गई चीज़ों की ड्राइंग बनाऊँगा, परंतु मैं यह तभी बनाऊँगा, जब बच्चे उस वस्तु या चीज़ के लिए प्रयुक्त होने वाले अंग्रेज़ी शब्द को बता देंगे। इसके लिए वह अन्य अध्यापकों, बच्चों एवं प्रशिक्षु-शिक्षकों से पूछ सकते हैं। मेरी ड्राइंग बहुत अच्छी नहीं है, यह मेरे लिए हमेशा से एक चुनौती रही है, एक तरह से मेरे स्कूली अनुभव इस विषय में बहुत आनंददायक नहीं रहे हैं। वस्तुत: कला विषय में चित्र आदि बनाना तो मेरे लिए हमेशा से एक कठिन कार्य ही रहा है। मैंने अपनी मुश्किल बच्चों के सामने रखी कि मेरी ड्राइंग बहुत अच्छी नहीं है, शायद अच्छे चित्र न बना सकूँ। सभी बच्चों ने एक स्वर से कहा, कोई बात नहीं, जैसा भी बना सकते हैं, बनाएँ। अरे वाह! बच्चे मुझे मेरी कमज़ोरी के साथ भी स्वीकार कर रहे थे, बहुत बार हम शिक्षक इस तरह से सोच नहीं पाते हैं।

खैर, कक्षा आगे बढ़ी, बच्चों ने कहा कि पर्वत बनाओ। मैंने बच्चों से पूछा कि पहाड़ या पर्वत। अब बच्चों के लिए चुनौती थी कि वे पता लगाएँ कि ये दोनों एक ही हैं या अलग-अलग, इनके लिए सटीक अंग्रेज़ी शब्द क्या हैं? बच्चों की खोजबीन शुरू हुई, पहले आपस में, बाद में अपने विद्यालय के अध्यापकों से, प्रशिक्षु-शिक्षकों से पूछताछ। कुछ समय बाद पर्वत एवं पहाड़ी के बारे में बच्चे अपने विचारों के साथ सामने थे, पर्वत ऊँचे, जाने में दुर्गम होते हैं, वहाँ लोग नहीं रहते, सिर्फ़ पेड़, चट्टानें एवं पत्थर होते हैं, बहुत ऊँचे पर्वतों पर तो बर्फ़ भी होती है और पहाड़ी कुछ कम ऊँची होती हैं, इन पर गाँव बसे होते हैं, सामने नज़र आने वाले हिमालय को बच्चों ने पर्वत बताया और मानव बसावटों से युक्त ऊँचाई वाली जगहों को पहाड़ी कहा, इशारा करके बताया कि सामने भीलेश्वर मंदिर वाला भू-भाग पहाड़ है। इनके लिए अंग्रेज़ी शब्द बच्चों ने *Mountain* और *Hill* खोज लिए थे। कक्षा 5 के स्तर पर पर्वत एवं पहाड़ के बारे में बच्चों की यह समझ मुझे ठीक ही लगी, मैंने भी इसमें किसी प्रकार के जोड़-घटाव से अपने को दूर ही रखना बेहतर समझा। इन दोनों में अंतर की बारीकियों को आने वाले वर्षों/कक्षाओं में बच्चे जान ही लेंगे। अब मैंने हिमालय पर्वत के साथ-साथ सामने दिखाई दे रहे पहाड़ का रेखाचित्र बोर्ड पर बनाया (बनाने का प्रयास किया)। इन पर इनके लिए प्रयुक्त किया जा सकने वाले अंग्रेज़ी शब्द *Mountain* और *Hill* लिख दिए। बच्चे बोर्ड पर बनाई गई आकृतियों को स्वीकार कर रहे थे, यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। बचपन से ही कला विषय को लेकर अपने संकोच से एक तरह से उबरने लगा था। मेरे साथ-साथ बच्चों द्वारा अपनी ड्राइंग शीट में अपनी-अपनी कल्पना के अनुरूप चित्र

उभरने लगे थे। यह बात तो पहले से ही तय हो गई थी कि उनको बोर्ड पर बने चित्र को उतारना नहीं था, अपने-अपने ढंग से चित्र बनाने थे, अंग्रेज़ी शब्दों को लिखना ज़रूर था। बच्चों को यह आज़ादी पसंद भी आ रही थी। इसी प्रकार से मुझे चित्र में नदी बनाने को कहा गया। बच्चों ने नदी के लिए अंग्रेज़ी शब्द खोजा और मैंने नदी को चित्र में दर्शाया और लिखा *River,* बच्चों को इस नदी में पानी चाहिए था। सामने नदी बह रही थी, मेरे लिए उपयुक्त अवसर था कि बच्चों को नदी के अवलोकन के अवसर दूँ। कक्षा बरामदे में चल रही थी, सामने नदी नज़र आ रही थी, कक्षा में बैठे-बैठे यह संभव भी था। मेरा बच्चों से अगला स्वाभाविक प्रश्न था कि नदी के पानी का रंग कैसा है? बच्चों ने बिना देरी किए कहा सफ़ेद। कुछ गड़बड़ थी। वस्तुत: बरसात का दिन था, नदी उफ़ान पर थी और पानी मटमैला/भूरा था। एक बार फिर गौर से देखने को कहा तो लगभग आधे बच्चों का मन बदल गया, वे अब भूरा/मटमैला के पक्ष में आ गए। बाकी बच्चों के लिए अभी भी सफ़ेद रंग था। पुन: नदी के अवलोकन एवं बच्चों की आपसी बहस के बाद भूरा/मटमैला रंग पर सहमति बन गई। बोर्ड पर नदी में पानी दर्शाया गया, रंग के लिए अंग्रेज़ी शब्द खोजा गया *Brown/Earthen* बोर्ड पर लिखा। दो बच्चे जो नदी के पानी के रंग को लेकर बहुत संतुष्ट नहीं थे, ने अपनी-अपनी पानी की बोतल को निकालकर पानी देखना शुरू किया। पानी के रंग को लेकर बच्चों की जिज्ञासा के मद्देनज़र इस पर कुछ समय लगाना उचित था। बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर अलग-अलग जगहों पर देखे गए पानी के रंगों के बारे में बातचीत करने लगे। होली में लाल, हरे, नीले, पीले रंग का पानी। नदी का मटमैला पानी, बच्चों की वाटर बोतल की रंगों के अनुसार नज़र आने वाला पानी। बच्चे असमंजस में थे कि वास्तव में पानी का अपना रंग कैसा होता है? अब प्रयोग करना ज़रूरी हो गया था। एक सादे काँच के गिलास में पानी डालकर देखा गया, यहाँ तो कोई रंग ही नहीं नज़र आ रहा था। फिर इस पानी में कुछ मिट्टी मिलाकर देखा गया, पानी मटमैला हो गया। पुन: साफ़ पानी में हरी पत्तियाँ मसलकर मिलाई गईं तो यह कुछ-कुछ हरा होने लगा। बच्चे किसी निष्कर्ष पर पहुँचने को बेताब थे, मैं जानबूझकर अभी हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था।

मेरी इच्छा थी कि बच्चे एक स्तर तक इस स्थिति से जूझें। इससे कोई न कोई निष्कर्ष सामने ज़रूर आएगा और ऐसा नहीं भी हो पाया तो इससे बच्चों में खोजने, जानने, प्रयोग करने एवं विचार-विमर्श का अभ्यास तो होगा ही। इसी बीच एक बच्चा बहुत ही गंभीरता से बोला कि अब मेरी समझ में आया कि पानी का कोई रंग होता ही नहीं है, जिस रंग के पदार्थ इसमें आकर मिलते हैं, यह उसी रंग का दिखाई देता है। यह तो बच्चों के लिए किसी आविष्कार से कम नहीं था, यूरेका...यूरेका वाली मनोदशा। उन्हीं बच्चों ने यह बात सभी को स्पष्ट भी कर दी, प्रयोग तो पहले हो ही चुके थे। बाकी बच्चे इस विचार से सहमत नज़र आए।

रंगों की बात चल ही पड़ी थी, बच्चे आस-पास के पेड़-पौधों, वनस्पति, सामने पहाड़ी के रंग का अवलोकन करने लगे। अब बच्चे बताने लगे कि हरा

रंग तो अलग-अलग रूप में हैं, कहीं गहरा हरा, कहीं तोते के रंग जैसा हरा, कहीं धान के पौधे जैसा हरा आदि-आदि। अब इनके लिए अंग्रेज़ी शब्द *Parrot, Green, Dark Green, Light Green,* आदि बोर्ड पर लिखे गए।

बाद में बोर्ड में चित्र में नदी के ऊपर पुल, पेड़, घर, घर के दरवाज़े, खिड़कियाँ, खेत, बैल आदि बनाने को कहा गया, मैंने बनाने की कोशिश की (बैल का चित्र बनाने में तो किसी बच्चे ने मदद भी की) इनके लिए प्रयुक्त होने वाले अंग्रेज़ी शब्द लिखे गए। इस प्रकार से लगभग 34–35 अंग्रेज़ी शब्द बोर्ड पर लिखे जा चुके थे और ये मात्र शब्द ही नहीं थे, बच्चों की खोजबीन एवं जाँच-पड़ताल के बाद बोर्ड पर लिखे गए थे, इनका बच्चों के लिए कोई संदर्भ था, बच्चों के लिए इनके संदर्भ युक्त अर्थ भी थे। कम-से-कम मेरा तो ऐसा विश्वास है। मैं अपने पूर्व निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने को लेकर मन ही मन खुश था कि बच्चों ने भले ही ड्राइंग बनाने का आग्रह किया था, पर मैंने तो 34–35 अंग्रेज़ी के शब्द बच्चों के माध्यम से बोर्ड पर ला ही दिए हैं।

अब कालांश का समय पूरा होने को था, मैंने बच्चों से जानना चाहा कि इस कालांश के 34–35 मिनटों का उनका अनुभव कैसा रहा? उन्हें कैसा लगा? बच्चों ने कहा बहुत मज़ा आया, समय का पता ही नहीं चला। मैं खुशी से फूलकर कुप्पा, मेरी खुशी बहुत देर तक नहीं रह पाई। एक बच्ची ने अपने मन की बात सामने रख ही दी, अच्छा! सर आप अंग्रेज़ी पढ़ाना चाह रहे थे। बच्ची मेरी योजना को बखूबी समझ गई थी, शायद मेरी शिक्षकोचित चालाकी को भी। दूसरे बच्चे ने कहा कि नहीं सर ने ड्राइंग के साथ अंग्रेज़ी के शब्द भी सिखाए, एक दूसरे बच्चे का कहना था कि हमने विज्ञान भी सीखा— पानी का कोई रंग नहीं होता और इसमें मिलने वाले पदार्थ के रंग के अनुसार इसका अलग-अलग रंग दिखलाई पड़ता है, मैं यह बात अपने साथियों को बताऊँगा।

इस अनुभव के आलोक में शिक्षण रणनीति के क्रम के कुछ महत्वपूर्ण सबक मिलते हैं, जैसे —

सीखने-सिखाने के क्रम में बच्चों को यह स्पष्ट हो कि कक्षा कालांश के समय में क्या-क्या होने जा रहा है?

इससे कौन-कौन से शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सकेगी?

बच्चों को खोजबीन करने, जाँच-पड़ताल करने के अवसर कहाँ-कहाँ दिए जा सकेंगे?

इसके बाद बच्चे क्या जान-समझ सकेंगे? और यह बच्चों के लिए किस तरह से उपयोगी हो सकेगा?

बच्चों ने क्या कुछ जाना-समझा है? इसका पता किस प्रकार लगाया जाएगा?

इस अनुभव से एक पुख्ता सबक मिलता है कि विद्यालय में, कक्षा-कक्ष में या फिर अन्य गतिविधियों में शिक्षक के रूप में जो भी प्रक्रिया अपनाते हैं, बच्चे उसका बहुत ही गहनता से संज्ञान लेते हैं, अनुभव करते हैं, समझते हैं। बहुत बार वह कुछ बताते नहीं, मन में ही रख लेते हैं। बहुत कम बार कह पाते हैं। मुझे सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि बच्चों ने बेझिझक अपनी बात रखी, संभवत: हमारे बीच विश्वासाश्रित संबंध बन रहे हों, उनके

मन में भय न हो, अपनी बात को खुलकर कहने का साहस पैदा हो रहा हो। यदि यह सब घटित हो रहा हो तो बच्ची का फ़ीडबैक 'अच्छा! सर आप अंग्रेज़ी पढ़ाना चाह रहे थे' मेरे लिए बहुत मायने रखता है और इस बात की ओर संकेत करता है कि अपनी शिक्षण योजना के प्रत्येक पहलू पर हमें बच्चों से बात करनी चाहिए, बच्चों को बहुत स्पष्टता से मालूम होना चाहिए कि कक्षा में कालांश के निर्धारित समय में क्या-क्या होने जा रहा है और यह बच्चों के लिए ज़रूरी है।